

जिस्म की जरूरत-16

“ अपनी असफलता से दुखी होकर मैंने वंदना की आँखों में देखा और उसने मेरी मुश्किल को भांप लिया... अब हम दोनों ने एक दूसरे के होठों को आजाद कर दिया... [\[Continue Reading\]](#) ... ”

Story By: sameer chaudhary (sameer_chaudhary)

Posted: Monday, March 30th, 2015

Categories: [जवान लड़की](#)

Online version: [जिस्म की जरूरत-16](#)

जिस्म की जरूरत-16

अपनी असफलता से दुखी होकर मैंने वंदना की आँखों में देखा और उसने मेरी मुश्किल को भांप लिया... अब हम दोनों ने एक दूसरे के होठों को आजाद कर दिया था और मैं इस उधेड़बुन में था कि वो खुद अपने कुरते को निकलेगी या फिर मुझे कोई इशारा देगी... लेकिन वो बस शरारत भरे अंदाज़ में मुस्कुराती रही...

यह शायद उसका मौन निमंत्रण था जिसमें उसकी रजामंदी भी छिपी थी।

मैंने धीरे से उसे अपनी बाँहों का सहारा देते हुए उठाया और बैठा दिया... अब उसकी आँखों में एक टक देखते हुए उसकी कुरती को अपने दोनों हाथों से पकड़ कर आहिस्ता-आहिस्ता ऊपर की तरफ निकलने लगा।

वंदना ने शरमाते हुए कार के बाहर चारों तरफ झांक कर सुनिश्चित किया कि कहीं कोई देख न रहा हो... और फिर धीरे से अपनी दोनों गुन्दाज बाहें उठा दीं।

जैसे ही कुरती उसके सीने से ऊपर हुई तो उस अँधेरे में भी उसकी सिल्की ब्रा चमकने लगी और उससे भी ज्यादा उसकी हसीन चूचियाँ दूध की तरह सफ़ेद और मखमली एहसास लिए हुए मेरी आँखों में चमकने लगी।

दोनों बाजूओं के ऊपर होने से उसकी चूचियाँ आपस में बिल्कुल सैट गई थीं और तनकर चूचियों की घाटी को और भी गहरा बना रही थी...

मुझसे बर्दाश्त नहीं हुआ और मैंने झुककर उन घाटियों के ऊपर अपने दहकते हुए होंठ रख दिए।

कुरती अब भी वंदना के गले में फंसी हुई थी और जैसे ही मैंने उसकी चोटियों पे चूमा..

उसने एक ज़ोरदार सांस खींच कर झट से लगभग अपने कुरते को फाड़ते हुए निकाल फेंका और मेरे सर को अपनी चूचियों में दबा लिया...

उफफ... वो भीनी सी खुशबू... और वो रेशमी एहसास... बयाँ करना मुश्किल है...स

मैंने अपनी दोनों बाहों में उसके चिकने बदन को बिल्कुल समेट सा लिया और उसकी चूचियों पर चुम्बनों की झड़ी लगा दी।

‘उफफ... समीर... मैं पागल हो जाऊँगी... ऐसा मत करो... सीईईई..’ वंदना ने एक कामुक सी सिसकारी लेते हुए धीरे से मेरे कान के निचले भाग को अपने होठों में भरा और कहा... वासना और उन्माद की लहरें उसकी आवाज़ में साफ़ साफ़ सुनी जा सकती थी।

उसके ऐसा करने से मुझे थोड़ी सी गुदगुदी हुई और मैंने उसकी चूचियों को अपने दांतों से धीरे से काटा, मैंने उन घाटियों को इतना चूमा कि मेरे चूमने की वजह से वहाँ की पूरी त्वचा लाल सी हो गई... और मेरे मुँह से रिश्ते हुए लार की वजह से पूरी घाटी चमचमा उठी...

वंदना पूरे समर्पण के साथ अपनी आँखें बंद किये लम्बी लम्बी साँसें ले रही थी, मैंने धीरे से अपने हाथों को जो उसकी पीठ पर थे उन्हें सहलाते हुए वंदना की ब्रा के हुक के पास ले आया... मेरे होंठ अब भी उसकी चूचियों पर ही थे।

ब्रा का हुक टूट गया

ऋक... एक जानी पहचानी सी आवाज़ हुई... यह आवाज़ मुझे बहुत पसंद है... पता नहीं कितनी बार इस आवाज़ ने मेरे जोश को और दोगुना किया था... अब आप समझ ही गए होंगे क्यों...

इस आवाज़ ने यह एहसास दिलाया कि अब मेरी आँखें उन उन्नत विशाल कोमल कठोर

यौवन पर्वतों के दर्शन करने वाले हैं जिसके दर्शन करने को इस पृथ्वी के सारे मर्दों की आँखें हर समय तरसती रहती हैं... चाहे ये पर्वत किसी भी आकार के हों, मर्दों की आँखों में ऐसे समा जाते हैं जैसे उन्हें कभी आँखों से ओझल न होने देना चाहते हों...

यह कहानी आप अन्तर्वासना डॉट कॉम पर पढ़ रहे हैं !

उस आवाज़ को सिर्फ मेरे कानों ने ही नहीं सुना था... वंदना को भी इस बात का पूरा एहसास हुआ और उसने झट से अपनी आँखें खोल लीं... और नारी सुलभ लज्जा के कारण अपने दोनों हाथों को अपने सीने पे रख कर अपनी चूचियों को ढक लिया।

वंदना की यह हरकत मुझे ये यकीन दिलाने के लिए काफी थे कि यह शायद उसके लिए पहला अनुभव था जब कोई मर्द उसके उभारों को नग्न देखेगा।

मैं उसे देख कर मुस्कुरा उठा और उसके चेहरे को पकड़ कर उसकी आँखों में आँखें डाल कर एक प्रेम से अभिभूत मिन्नत की... इस मिन्नत में कोई आवाज़ नहीं थी... बस खामोशियाँ और आँखों के इशारे...

प्रेम की कोई भाषा नहीं होती... यहाँ भी कुछ ऐसा ही हाल था। हम दोनों की आँखें एक दूसरे से बातें किये जा रहे थे। मेरी मिन्नत को समझने में वंदना को कोई परेशानी नहीं थी फिर भी औरत तो औरत ही होती है, उसने अपनी नज़रें झुका लीं.. मेरे हाथों ने अब भी उसके चेहरे को यँ ही पकड़े रखा था।

तभी उसने अपने कांपते हुए हाथों को धीरे से अपने सीने से अलग करते हुए मेरे सर को हौले से पकड़ा और अपनी गर्दन ऊपर पीछे की तरफ करते हुए अपने सीने से लगा दिया।

हाथ हटते ही उसकी चूचियाँ मानो उछल कर बाहर आ गई हों... उसकी सिल्की ब्रा अब उसकी चूचियों को आज़ाद करके खुद एक संतरे के छिलके की तरह लटक चुकी थी पर अब

भी उसकी बांहों में ही फंसी हुई थी।

आज़ाद होते ही उसकी बेहतरीन चूचियों पर मैंने अपने नाक से हर जगह की खुशबू लेनी शुरू की, पूरी की पूरी चूची इतने मदहोश कर देने वाली खुशबू छोड़ रही थी कि बस जी कर रहा था कि ऐसे ही उसकी पूरी खुशबू को अपनी साँसों में बसा लूँ।

सूँघते-सूँघते मैंने अपने दाँतों से उसकी ब्रा को पकड़ कर बड़े ही फिल्मी अंदाज़ में उसके हाथों से बाहर कर दिया और बेचारी वो सिल्की सी ब्रा सीट के नीचे गिरकर उस खजाने को लुटते हुए देखने लगी जिसे न जाने कितने दिनों से दुनिया की नज़रों से छुपा रखा था उसने।

मेरी नाक ने वंदना को कई ऐसे सिहरन दिए जिसे वंदना दबा कर नहीं रख पा रही थी और वो सिहरन सिसकारियों के रूप में उसके मुँह से बाहर आ रही थी.. उसकी उँगलियाँ मेरे बालों से अठखेलियाँ कर रही थी।

अब बारी आई उसकी चूचियों के रसपान की... मैंने धीरे-धीरे अपने होठों से उसकी दोनों चूचियों को हर जगह चूमना शुरू किया... अँधेरे की वजह से मैं उन चूचियों को ठीक से देख नहीं पा रहा था और इस बात से मुझे बुरा लग रहा था।

तभी एक बिजली कड़की... और मेरी आँखों ने उन पर्वतों के साक्षात् दर्शन कर लिए... बस एक दो सेकंड सेकेण्ड के लिए ही सही लेकिन बिजली की चमक ने उन खूबसूरत उभारों को इतना उजागर कर दिया कि उत्तेजना में कड़ी उन चूचियों की नसों तक साफ़ दिख गई और साथ ही उन चूचियों के ठीक मध्य भाग में वो गुलाबी सा घेरा और उस घेरे के ऊपर किशमिश के दाने के आकार की घुंडी...

उफ़फ़... मैं बावला हो गया और उस अचानक हुए उजाले में उन घुण्डियों की तरफ निशाना साध कर अपने होठों को टिका दिया.. निशाना बिल्कुल सटीक बैठा था।

अँधेरा अब भी था और बारिश की बूंदें अब भी शोर मचा रही थीं... लेकिन मेरे होठों ने जैसे ही वंदना की चूची की घुंडी को अपने अन्दर समेटा, एक जोरदार सिसकारी के साथ वंदना ने मेरे बालों को बड़े जोर से खींचा... अपने पैरों को बिल्कुल एक साथ जोड़कर यूँ ऐंठने लगी जैसे उसे किसी बिजली के तार ने छू लिया हो।

लम्बी-लम्बी साँसें... और धड़कते हुए दिल की आवाजों के साथ उसने अपने बदन को कदा कर लिया और अपनी कमर के 3-4 झटके दिए... मुझ जैसे अनुभवी खिलाड़ी के लिए यह समझना मुश्किल नहीं था कि मेरे होठों की छुवन ने वंदना को चरमोत्कर्ष पर पहुँचा दिया था और उसकी मुनिया ने अपने रस को धीरे से विसर्जित कर दिया था।

वंदना का पूरा बदन काँप रहा था... मैंने उसकी चूची की घुंडी को अपने पूरे मुँह में होठों के बीच रख लिया और अन्दर से अपनी जीभ की नोक को उस घुंडी पे चलाने लगा। हमारी पाठिकाएँ इस एहसास को बखूबी जानती होंगी और यह भी जानती होंगी कि ये क्षण पूरे बदन को कितनी गुदगुदी से भर देते हैं... लेकिन इस गुदगुदी में हंसी नहीं निकलती बल्कि पूरे बदन में एक सिहरन सी दौड़ जाती है।

ऐसा ही कुछ वंदना के साथ भी हुआ और उसका बदन झनझना उठा... मैंने अपने जीभ की करामात जारी रखी और अब अपने दूसरे हाथ को वहाँ पहुँचा दिया जहाँ उसे उस वक्रत होना चाहिए था।

उसकी दूसरी चूची को अपने दूसरे हाथ की हथेली में भरते हुए मैंने उन्हें हौले-हौले मसलना शुरू किया।

वंदना भी अभी-अभी स्खलित हुई थी... इसलिए उसने अपने बदन को अब बिल्कुल ढीला कर दिया और अपने आप को मेरे हवाले कर दिया... अब मैंने उसकी पहली चूची को अपने होठों से अलग किया और फिर दूसरी चूची की तरफ बढ़ा।

उसकी दूसरी चूची को मुँह में भरने से वंदना को एक बार फिर से उत्तेजना हुई, मेरे दूसरे

हाथ ने अब उसकी वो चूची थाम ली जिसे मैंने चूस चूस कर गीला कर दिया था ।

एक तो पहले ही उसकी चूचियाँ चिकनी थीं, ऊपर से मेरे मुँह से निकले रस से सराबोर होकर और भी चिकनी हो गई थीं... मेरी हथेली में भरते ही उसकी चूचियों की चिकनाहट ने वो आनन्द दिया कि मैंने एक बार अपनी हथेली को जोर से भींच कर चूचियों को लगभग कुचल सा दिया ।

‘आआह्हह... ..सीईईई ईईस्सस्स...’ बस इतना ही निकल सका उसकी जबान से.. मैंने मज़े से उसकी चूचियों का रसपान जारी रखा और साथ ही साथ मर्दन भी करता रहा । कहानी जारी रहेगी ।

